International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बालकों के नैतिक विकास पर अभावग्रस्तता का प्रभाव

डॉ0 ऋतु कुमारी
व्याख्याता, मनोविज्ञान विभाग,
डॉ0 जगन्नाथ मिश्रा महाविद्यालय
बी.आर.अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

भूमिका

अभावग्रस्तता का अर्थः—

अभावग्रस्तता के सम्प्रत्यय का अर्थ कई रूपों में लिया गया है। अधिकतर इसका प्रयोग अपरिवर्त्तनीय रूप से अन्य पारिभषिक शब्दों के साथ किया गया। जैसे असुविधा, सांस्कृतिक अभावग्रस्तता, सामाजिक अभावग्रस्तता, मनोवैज्ञानिक अभावग्रस्तता, वातावरणीय अभावग्रस्तता आदि।

अभावग्रस्तता का शाब्दिक अर्थ है अभाव या सुअवसरों की हानि, या अधिकारों का हनन इत्यादि। मनोवैज्ञानिक शोधो के अन्तर्गत अनिवार्य आवश्यकताओं में की या अक्षमता के लिए इसे स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाता है, वर्त्तमान में हुए शोधो में अभावग्रस्तता के संदर्भ में तीन प्रकार के चरेां का प्रयोग किया गया है।

(क) वातावरण की अपूर्णता या त्रुटिपूर्णता।

(ख) कंगालपन या भिखारीपन का अनुभव।

(ग) व्यक्तिगत विशेषता

अभावग्रस्तता मुलतः एक आर्थिक सम्प्रत्यय है। इससे अन्य तत्वों में से आर्थिक तत्व एक है, लेकिन इन समुहों की प्रकृति एंव संरचना ऐसी है जो एक देश से दूसरे देश में बदलती रहतो है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राकृतिक विन्यास के लिए किए गये अध्ययन में अभावग्रस्तता में स्वगुणार्थ की विविधता पायी जाती है। अन्य विषयों के साथ यह अपरिवर्त्तनात्मक है जैसे – सांस्कृतिक अभावग्रस्तता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक हानि, मनोवैज्ञानिक अभावग्रस्तता और सामाजिक अभावग्रस्तता।

अभावग्रस्तता की परिभाषा :–

अभावग्रस्तता शब्द का प्रयोग पहले भी कई रूपों में किया जा चुका है। जो अपर्याप्त वातावरणात्मक स्थितियों एवं शून्य अनुभवों के साथ–साथ विभिन्न आयामों को सूचित करता है। अभावग्रस्तता को परिभाषित करना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य हैं। क्योंकि अभावग्रस्तता के केवल विशेष पहलुओं पर ही विचार किया गया है एवं विभिन्न पहलुओं को सामुदायिक रूप से उद्धृत किया गया है। फिर भी अभावग्रस्तता की कुछ परिभाषाएँ निम्न शब्दों में निरूपित की गई है:–

''सामाजिक अभावग्रस्तता एक सम्बन्धित शब्द है जो सिर्फ पर्यावरणात्मक तत्वों के विशेष प्रकारों का उल्लेख करता है''(व्हाईटमैन और डच)

''अभावग्रस्तता मौलिक आवश्यकताओं की दीर्घकाल तक अपर्याप्त सन्तुष्टि है।'' (लॉगमीर)

''अभावग्रस्तता का प्रयोग बचपनावस्था की उद्दीपक स्थितियों की त्रुटियों को प्रस्तुत करने के लिए किया गया है।'' (गार्डन)

''सांस्कृतिक अभावग्रस्तता अर्द्ध – स्वतंत्रता को देने में, एक सुअवसर देने में अक्षम है जो कि उचित विकास के लिए आवश्यक है। संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं में कुशलता प्राप्ति के लिए प्रमुख प्रक्रिया है।'' (हन्ट)

सामाजिक अभावग्रस्तता को ऐसी स्थिति के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है जिसमें आत्मसंतुष्टि उपलब्ध करने के विशेष व्यवहारात्मक विकल्प अनुपस्थित है या नहीं है।'' (टैननबैग)

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अभावग्रस्तता के प्रकार :–

''मनोवैज्ञानिक सार'' सूची में दो दर्जन से भी अधिक प्रकार के अभावग्रस्तता का उल्लेख मिलता है जैस– उद्दीपक, सांस्कृतिक, अहंकारात्मक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, भाषिक, शैक्षणिक, भौतिक और पर्यावरणीय इत्यादि। अभावग्रस्तता की अवस्थाओं को वरियता के साथ वर्गीकृत करने के लिए कोई निश्चित मापदंड नहीं है, फिर भी अभावग्रस्तता निम्नलिखित मानकों के सन्दर्भ में वर्गीकृत किया गया है।

जैविक बनाम पर्यावरणाः–

अभावग्रस्तता का स्थान वातावरण भी हो सकता है। यहॉ वर्गीकरण का आयाम साधारणतया वातावरण की प्रचुरता बनाम निर्धनता के रूप में प्रयुक्त किया गया है। उदाहरणार्थ गाँव, शहर का मामला या गंदी बस्ती, स्वच्छ बस्ती, के क्षेत्र। जीवन स्तर के सम्बन्ध मे घर, रोजगार, शिक्षा आदि। लक्ष्य और लोगों की अनुपस्ति (माता–पिता) में एक साघारणतया परिचालित वातावरणात्मक अभाव जिसे सामान्य प्रकिया में उपस्थित होना चाहिए। अभाव ग्रस्तता हमशा एक ही समूह की नही होती है और नही एक ही क्षेत्र के चरों में आपस में सम्बन्ध होता है।

वस्तुनिष्ठ बनाम आत्मनिष्ठ

वस्तुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ के मापदंड के सम्बन्ध भी अभाव ग्रस्तता को प्रतिष्ठित रुप मे देखा गया है। वास्तव मे अभावग्रस्तता दूरवर्ती, व्यक्तिगत, आत्मनिष्ठ क्षेत्रो की माप के लिए स्वतंत्र है। अभावग्रस्तता मनोवैज्ञानिक कियाओं के लिए कम–से–कम मौलिक आवश्यताओं की धारणा के साथ द्यनिष्ठ रूप से सम्बन्धित है। यह माना जाता है कि एक व्यक्ति यह वयक्ति यह जानता है कि क्या आवश्यक है औ र कितनी मात्रा में। यदि ''वंचित'' पतन उसके आत्मनिष्ठ स्तर से से नीचे होता है तो वह अभावग्रस्तताका अनुभव करता है। अन्य बराबर

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

के सम्बन्धों की तुलना के बाद वह सफलता को प्रप्त कर सकता है। वस्तुनिष्ठ अभावग्रस्तता जीवों के संचलित क्षेत्रो का नेतृत्व करता है फिर भी कई अध्ययनो के द्वारा इसकी पुष्टि की गयी है कि अभवग्रस्तता संचलित क्षेत्र का नेतृत्व नहीं करती बल्कि उसका अवबोधन इसे संचलित करता है।

प्रक्कल्पना

अभावग्रस्तता संप्रत्यय का अर्थ कई रूपों में लिया गया है। अधिकतर इनका प्रयोग परिवर्तनीय रूप मे अन्य पारिभाषिक शब्दों के साथ किया गया है। जैसे–असुविधा, सांस्कृतिक, समाजिक अभावग्रतता, आदि।

अभावग्रस्तता का अर्थ है ''अभाव'' या सुअवसरों की हानि या अधिकारों का हनन आदि। मनोविज्ञानिक शोधों के अंतर्गत अनिवार्य आवश्कताओं की कमी या अक्षमता के लिए इसे स्वतंत्र रूप से प्रयोग किया जाता है। अभावग्रस्तता के संबंध में तीन प्रकार के चारो का प्रयोग किया गया है। वातावरण की अपूर्णता, कंगालपन और व्यक्तिगत विशेषता। अभावग्रस्तता मूलतः एक आथिक संप्रत्यय है। इसके अन्य तत्व है। लेकिन इन समुहों की प्रकृति एंव संरचना ऐसी है जो एक दूसरे देश में बदलती रहती है। प्रकृतिक विन्यास के लिए किया गया अध्ययन में अभावग्रस्तता के स्वगुणार्थ की विविधता पाई जाती है अन्य विषयों के साथ यह अपरिवत्तनात्मक है जैसे सांस्कृतिक अभावग्रस्तता सामाजिक एवं सांस्कृतिक हानि मनोवैज्ञानिक अभावग्रस्तता और सामाजिक अभावग्रस्तता।

साधारणतया अभावग्रस्तता शब्द का प्रयोग नियंत्रित प्रयोगशाला में आचरणात्मक विशेषताओं, व्यवहारात्मक संपत्तियों या गुणों की गणना के लिए अनुभावात्मक चर और व्याख्यात्मक निर्माण के लिए उसी प्रकार किया गया है जिस प्रकार प्राकृतिक विन्यास में या प्राकृतिक पर्यावरण में संवेदीक अभावग्रस्तता के अध्ययन में संवेदी अभिप्रेरक का उल्लेख किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वस्तुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ के मापदंड के संबंध में अभावग्रस्तता को प्रतिष्ठित रूप में देखा गया है। वास्तव में अभावग्रस्तता दूरवर्त्ती, व्यक्तिगत, आत्मनिष्ठ क्षेत्रों की माप के लिए स्वतंत्र है। इस संदर्भ में यह प्राक्कल्पना किया जाता है कि बालाकें के नैतिक विकास एवं माता–पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव निम्न अभावग्रस्तता बालकों में उच्च एवं अधिक अभावग्रस्त बालकों में निम्न रूप में पाया जायेगा।

विधि:

मिश्रा एवं त्रिपाठी 1978 में अभावग्रस्तता के संबंध में सामाजिक स्तर की आकांक्षाओं के बारे में अनुसंधान किया। उच्च अभावग्रस्त समूह का आकांक्षा स्तर निम्न एवं मध्यम समूह की अभावग्रस्तों में चिंता के अधिक प्रभाव देखें जा सकते हैं। सामाजिक और आर्थिक स्थिति भी अपना प्रभाव डालता है। मनोवैज्ञानिकों ने अभावग्रस्तता एवं स्व– विचार के बीच संबंध के अध्ययन में विचारणीय रूचि प्रदर्शित किया है। मिश्रा एवं त्रिपाठी के द्वारा इस मापनी के आधार पर अभावग्रस्तता परीक्षण में दो वर्ग निर्धारित किए गये हैं। प्रथम के अंतर्गत 21 प्रश्न है। इन प्रश्नों में उत्तरदाताओं के द्वारा कम से कम एक अंक एवं अधिक से अधिक 10 अंक प्राप्त किया जा सकता है। इन अंको के आधार पर अभावग्रस्तता का मापन किया गया है। यह बच्चों में अभावग्रस्तता के आधार पर व्यवहारों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह मापनी काफी विश्वसनीय है जिसके आधार पर नैतिक मूल्यों के विकास में अभावग्रस्तता की भूमिका किस रूप में होगी इसका मापन संभव है। इस मापनी की एक प्रति परिशिष्ट में संलग्न किया गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्रतिदर्श:

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य बालकों के नैतिक विकास में माता–पिता के प्रोत्साहन का प्रभाव का अध्ययन करना था। अतः यह अध्ययन बालकों के एक प्रतिदर्श पर किया गया। बिहार के मुजफ्फरपुर जिला अंतर्गत उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बारह साल के बच्चों को, चार सौ की संख्या को प्रतिदर्श के रूप में सम्मिलित किया गया। प्रतिदर्श में क्षेत्रीय दोष को दूर करने के लिए शहरी, अर्द्ध – शहरी एवं ग्रामीण। तीनों ही क्षत्रों में अवस्थित स्कूलों में अध्ययनरत छात्र – छात्राओं को बिना किसी पूव धारणा के आधार पर चुना गया।

परिणाम

अभावग्रस्तता से स्वगुणार्थ की विविधता पाई जाती है अन्य विषयों के साथ यह अंत परिवर्तनात्मक है। जैसेः–सांस्कृतिक, अभावग्रस्तता, सामाजिक एवं सांस्कृतिक हानि, मनोविज्ञान अभावग्रस्तता।

अभावग्रस्तता मूल रूप से एक आर्थिक संप्रत्यय है। इसके अन्य तत्वों में आर्थिक तत्व एक है लेकिन इन समूहों की प्रकृति एंव संरचना ऐसी है जो एक देश से दुसरे देश में बदलती रहती है।

अभावग्रस्तता के संप्रत्यय को कई रूपो में लिया जाता है। अधिकतर इसका प्रयोग अपरिवर्तनीय रूपो में अन्य पारिभाषिक शब्दो के साथ लिया गया है। जीवन की अभावग्रस्तता युक्त परिस्थितियाँ एक ऐसे व्यक्तिव को उत्पन्न करती है जो व्यवहार में कई प्रकार की अपर्याप्ताताओ को स्पष्ट करती है जिसके द्धारा गरीबी की समस्या प्रबलित होती है। अभावग्रस्तता को मापने के लिए अभावग्रस्तता मापनी मिश्रा एंव त्रिपाठी 1978 के द्धारा चार सौ बालकों के नैतिक विकास पर माता–पिता के प्रत्साहन के प्रभाव को देखने का प्रयास किया गया। सर्वप्रथम सामान्य अध्ययन के अंतरर्गत अभावग्रस्तता के वितरण के स्वरूप को देखने का प्रयास किया गया।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जिसका उल्लेख सारणी संख्या चार में वर्णित है आवृति का मध्यमान 46.87 मध्यांक 47.70 बहुलांक 49.36 तथा प्रामाणिक विचलन 16.00 प्राप्त हुआ है। प्रतिदर्श से प्राप्त ये आँकडे प्रदर्शित करते है कि चार सौ बच्चों से प्राप्त प्राप्तांकों का वितरण प्रसामान्य वितरण के अनुकुल है।

सारणी संख्या–1

माध्यमान	मध्यांक	बहुलक	पा0 वि0	म0 की प्र0 त्रुटि
46.87	47.70	49.36	16.00	0.90

उपयुक्त सांख्यिकीय विश्रलेषण से निम्नलिखित तथ्य स्पष्ट होते है:–

(क) प्रतिदर्श के अभावग्रस्तता प्रप्तांको का वितरण के प्रसामान्य वितरण के अनुकूल है।

(ख) प्रतिदर्श का यह माध्यमान वास्तविक जनसंख्या से इतना निकट है कि इसे जनसंख्या का प्रतिनिधि कहा जा सकता है।

प्राक्कल्पना संख्या – एक:

बालकों में नैनिक मूल्य माता–पिता को प्रोत्साहन एवं अभावग्रस्तता का तुलनात्मक अध्ययन सारणी संख्या – दो में वर्णित है।

सारणी संख्या – 2

समुह	संख्या	मध्यमान	प्रा0 वि0	म0 की प्र0 त्रुटि	म0 के अन्तरों की प्र0 त्रुटि	टी0 अनुपात	सार्थकता
निम्न अभावग्रस्तता प्रो0 समूह	100	54.15	8.70	1.12	1.56	4.514	0.01
उच्च अभावग्रस्तता प्रो0 समूह	100	45.80	8.35	1.08			

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 1, January 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com Double-Blind
Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपर वर्णित तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि उच्च प्रोत्साहन समूह के बच्चों में अभावगस्तता के कारण प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 4580 और निम्न प्रोत्साहन समूह के अभावग्रस्त बालाकों से प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 54.15 प्राप्त हुआ है। दोनो ही समूहों के बीच का अंर 8. 35 पाया गया है। दोनो ही समूहों से प्राप्त टी0 अनुपात का परिणाम 4.514 प्राप्त हुआ है जो 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। तृतीय अध्याय में की गई प्राक्कलप्ना प्रमाणित हो रही है। दोनेा ही समूहों के बीच सार्थक सह – संबंध की जॉच प्रोडक्ट मोमेन्ट सह – संबंध विधि के द्वारा किया गया। इस जॉच के आधार पर दोनों चरों के बीच 0.80 का सह – संबंध गुणांक प्राप्त हुआ जो 0.01 स्तर पर सार्थक प्रमाणित हो रहा है। (गिलफोर्ड 1956, गैरेट 1955)

इस अधार पर बालकों में नैतिक मूल्य माता–पिता का प्रोत्साहन पर अभावग्रस्तता के संबंध में निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुआ है।

(क) बालकों में नैतिक मूल्य एवं प्रोत्साहन तथा अभावग्रस्तता प्रतिदर्श के प्राप्तांक का वितरण जनसंख्या के प्रसामान्य वितरण सिद्धांत के अनुकूल है।

(ख) प्रतिदर्श का मध्यमान जनसंख्या के मध्यमान का वास्तविक प्रतिनिधित्व करता है।

(ग) उच्च अभावग्रस्त बालकों की अपेक्षा निम्न अभावग्रस्त बालकों में माता–पिता के प्रोत्साहन का नैतिक विकास पर अनुकूल प्रभाव पाया गया है।

(घ) अभावग्रस्तता नैतिक मूल्य और माता–पिता के प्रोत्साहन के बीच सार्थक सह –संबंध पाया गया है।

REFERENCE

Jahoda and Others . - Research Methods in Social Relation, New York, 1951

Jersid, A. - Child Psychology. Stenples Press Ltd. London, 1957

Kuppuswamy, B. - A text – Book of Child Behavior and Development, Vikas Publishing House, Delhi, 1983

Kohlberg, L. - The Development of Children' Orientations Toward a Moral Order. Vita Humava, 1963.

Piaget - Piaget's Theory. In Mussan Chamicholas Manual of Child Psychology. Weley, New York. 1970.

J.P. Guilford - Fundamental Statistics in Psychology and Education New York.Mc Graw Hill 1956) P-246.

J.Piaget - Piaget theory in Mussen P.N. (Ed.) Charmichael's Manual of Child Psychology (New York: Wily 1970) .

G. Mishra andTripathi -Problem Deprivation and Status perception Indian Journal of Social Work.

S. Sharma -Self Acceptance and Socio- Economic Status. Journal of Education and Psychology (1978).

G. Mishra and Tripathi -Prolonged Deprivation and Motivation Journal of Psychological Research(1972)

A. Agrawal and Tripathi Temporal Orientation and Deprivation. Journal of Psychological research, (1980).